प्रेस विज्ञप्ति

विषय – पद्मश्री डॉ. वी. के. सारस्वत, रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार द्वारा रसायन-जैव संवेदक सुविधा का उद्घाटन।

पद्मश्री डॉ. वी. के. सारस्वत, रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार ने आज दिनांक 24 **मई** 2012 **को रक्षा अनुसंधान एवं विकास स्थापना** (**डी.आर.डी.ई**) **ग्वालियर में नवनिर्मित रसायन-जैव संवेदक सुविधा का उद्घाटन किया। इस नवनिर्मित रसायन-जैव संवेदक सुविधा** (Chem-Bio Sensor Facility) **में रासायनिक एवं जैविक युद्धक अभिकारकों की त्वरित पहचान के लिए उन्नत संवेदकों के विकास पर कार्य होगा। इस एकीकृत सुविधा के कारण तकनीकी रूप से उन्नत संवेदकों के अनुसंधान एवं विकास की गति को बढ़ावा मिलेगा। भविष्य के प्रौद्योगिकीय विकास को ध्यान में रखते हुए इस नवनिर्मित रसायन-जैव संवेदक सुविधा** (Chem-Bio Sensor Facility) **में चार प्रभागों की स्थापना की गयी है। ये चार प्रभाग हैं – रासायनिक संवेदक विकास प्रभाग, जैव संवेदक विकास प्रभाग, उत्पाद अभियांत्रिकी प्रभाग एवं बायोइन्फॉरमेटिक्स। रासायनिक एवं जैविक युद्धक अभिकारकों की पहचान के लिए अंतर्राष्ट्रीय स्तर के संवेदकों के त्वरित विकास के लिए ये सभी प्रभाग एकीकृत रूप से कार्य करेंगे। डी.आर.डी.ई. ग्वालियर के वैज्ञानिकों एवं कार्मिकों को भी संबोधित करते हुए डॉ. वी. के. सारस्वत ने कहा कि "रसायन-जैव संवेदक सुविधा को देश सेवा के लिए समर्पित करना उनके लिए भी गर्व की बात है। आशा है कि यह सुविधा अपने उद्देश्य में सफल होगी। हमारा उद्देश्य महज अनुसंधान करना नहीं बल्कि देश की सशस्त्र सेनाओं व सामाजिक क्षेत्र के लिए उत्पादों और प्रौद्योगिकियों का विकास करना भी है। इसके लिए डी.आर.डी.ओ. देश भर में फैली आई.आई.टी., स्वायत्त विश्वविद्यालय, केन्द्रीय विश्वविद्यालयों जैसी शिक्षण संस्थाओं, निजी उद्यमों, व सार्वजनिक के साथ मिलकर कार्य कर रहा है। इस समय देश को जैवसुरक्षा** (Bio-defence) **के क्षेत्र में मजबूत ढ़ांचे के निर्माण की आवश्यकता है। देश के विभिन्न इलाकों में समय-समय पर फैलने वाली महामारियों को महज दैवीय प्रकोप मानकर चलना गलत होगा। हमें इन महामारियों की उत्पत्ति तथा प्रसार के बारे में पूर्ण जानकारी होनी चाहिए तथा इनके संपूर्ण डाटाबेस के रखरखाव से देश के महत्त्वपूर्ण मानव संसाधन व जैव संपदा की सुरक्षा सुनिश्चित हो सकेगी। रासायनिक, जैविक एवं नाभिकीय सुरक्षा के लिए ग्वालियर स्थित यह प्रयोगशाला नोडल प्रयोगशाला के रूप में कार्य कर रही है। अब यह स्थापना अनुसंधान के स्तर से ऊपर उठकर उत्पादों और प्रौद्योगिकियों के विकास तक पहुंच गयी है। अत: विश्वस्तरीय उत्पादों का निर्माण समय की आवश्यकता है। विश्वस्तरीय उत्पादों के विकास के लिए नवोन्मेष** (Innovation) **ही आधार स्तंभ है।"**

इस अवसर पर विशेष रूप से आमंत्रित डॉ. डब्ल्यु. सेल्वामूर्ति ने अपने संबोधन में कहा कि "डी.आर.डी.ई. ग्वालियर डी.आर.डी.ओ. की उन चुनिंदा प्रयोगशालाओं में से एक है जहां विश्वस्तरीय अनुसंधान दिखायी देते हैं। नाभिकीय, जैविक एवं रासायनिक सुरक्षा के क्षेत्र में डी.आर.डी.ई. ग्वालियर के नेतृत्व में 285 **करोड़ रुपये की लागत से प्रोजेक्ट चलाया जा रहा है। डी.आर.डी.ओ. देश की सशस्त्र सेनाओं के साथ-साथ सामाजिक क्षेत्र के प्रति**

भी प्रतिबद्ध है। डी.आर.डी.ई. ग्वालियर द्वारा विकसित बायोडाइजेस्टर को कुंभ मेले में भी स्थापित करने की योजना है ताकि हमारी प्रौद्योगिकी का लाभ सामान्य जनमानस तक पहुंच सके।

उद्घाटन के बाद आयोजित समारोह के प्रारंभ में स्थापना के निदेशक प्रो. (डॉ.) एम. पी. कौशिक ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार की प्रेरणादायक उपस्थिति से डी.आर.डी.ई. के वैज्ञानिकों को अपने अनुसंधान कार्यों को दुगने जोश के साथ आगे बढ़ाने का उत्साह प्राप्त हुआ है। उन्होंने संक्षेप में डी.आर.डी.ई. ग्वालियर का इतिहास एवं पृष्ठभूमि बताते हुए कहा विगत 02 दशकों में यह स्थापना रासायनिक एवं जैविक सुरक्षा के क्षेत्र में देश की अग्रणी संस्था के रूप में उभरी है। साथ ही उन्होंने स्थापना द्वारा संचालित हो रहे एन.बी.सी. कार्यक्रम का परिचय भी दिया।

इस अवसर पर डी.आर.डी.ओ. मुख्यालय से पधारे शीर्ष अधिकारीगण डॉ. ए. के. सिंह, निदेशक (मानव संसाधन), श्री रवि गुप्ता, निदेशक जनसंपर्क के अलावा डॉ. सुदर्शन कुमार, निदेशक सीफीस दिल्ली, श्री अजय सिंह, सी.सी.ई. नॉर्थ, के अलावा डी.आर.डी.ई. के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. जी.पी.राय, डॉ. बीर सिंह, डॉ. पी.वी.एल.राव, डॉ. वी.के.भट्टाचार्य आदि मौजूद थे। कार्यक्रम का संचालन डॉ. बी.डी.पाराशर ने किया।